वर्ष 6, अंक 12

ISSN 2456-3838

पिक्चर प्लस

ज़िन्दगी का बायस्कोप

जुलाई, 2023 ₹ 65

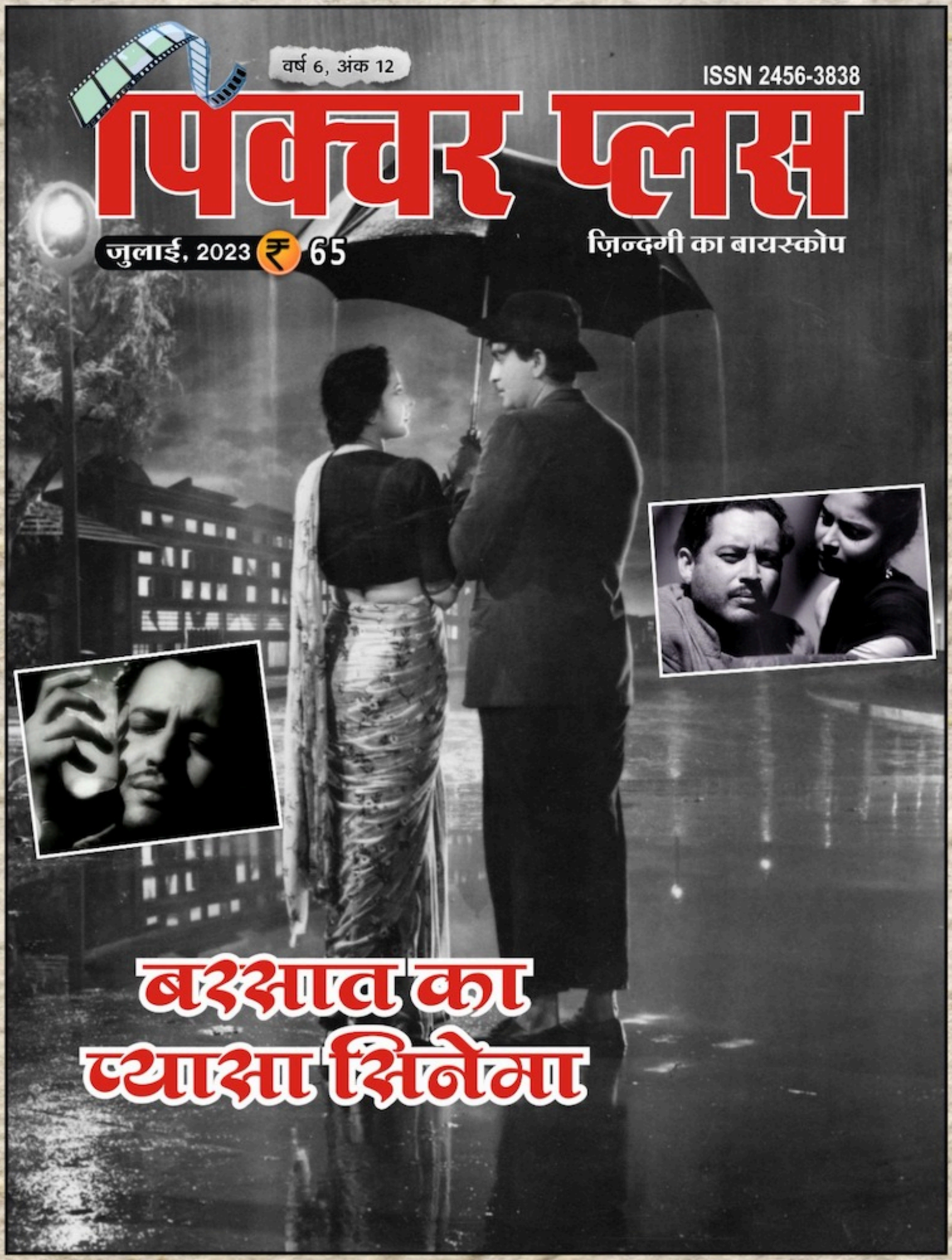

बरसात का प्यासा सिनेमा

ISSN 2456 - 3838
Licence N. F2(P19) PRESS 2016

पिक्चर प्लस
वर्ष-6, अंक-12, जुलाई, 2023
मासिक, द्विभाषिक/हिंदी-अंग्रेजी

संपादक
संजीव श्रीवास्तव

संपादन सहयोग
कल्पना कुमारी

कवर डिजाइन
ज़ाहिद मोहम्मद खान

लेआउट डिजाइन
शाश्वती

पंजीकृत पता
37/ए, तीसरी मंज़िल, गली नंबर 2
प्रताप नगर, मयूर विहार
फेज -1, दिल्ली - 110091

मूल्य- 65 रुपये (एक प्रति)
वार्षिक - 1,000 रुपये (व्यक्तिगत)
5,000 रुपये (संस्थागत)

पत्रिका के डिजिटल संस्करण नॉटनल
(www.Notnul.com) से खरीद सकते हैं।
संपर्क - 9313677771
Email: pictureplus2016@gmail.com

नोट : सभी रचनाओं में व्यक्त विचारों से पत्रिका की संपादकीय नीति, राजनीतिक विचारधारा तथा लेखक, प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं। पत्रिका के किसी भी पक्ष से संबंधित कानूनी निपटारे का न्यायिक क्षेत्र दिल्ली होगा।

(चित्र इंटरनेट से साभार व सभी पद अवैतनिक)

अनुक्रम

05 संपादकीय : चलती का नाम गाड़ी : हमारे लेखक, हमारे सलाहकार
06 अरविंद कुमार : माधुरी के वे दिन - "गुरुदत्त आत्महत्या कर ही नहीं सकते थे"
08 धर्मेंद्र नाथ ओझा - गुरुदत्त की दुविधा (जन्मतिथि पर विशेष)
बरसात का प्यासा सिनेमा (कवर स्टोरी)
11 प्रहलाद अग्रवाल - सात दशक से ठहरी एक तस्वीर!
13 डॉ. इन्द्रजीत सिंह - मौसम बीता जाये...
16 श्री 420 का वो गीत और मन्ना डे की यादें
17 शशांक दुबे - बिजली गिरा के आप खुद, बिजली से डर गये
19 श्याम माथुर - बारिश के मौसम में उदास है पानी
22 डॉ. पुनीत बिसारिया - अहा! रिमझिम के तराने...!
26 जयनारायण प्रसाद - वृष्टि पड़े टापुर टुपुर...(बांग्ला सिनेमा)
29 संजीव श्रीवास्तव - सिनेमा में सूखे का संकट
33 पिक्चर प्रसाद - राम और रामायण का ट्रांसफॉर्मेशन न करो!
34 अजय ब्रह्मात्मज (सिनेमाहौल) -मैं अटल हूं : सिनेमा और राजधर्म
डायलॉग प्लस
38 दीप भट्ट - फिल्म निर्माता त्रिनेत्र बाजपेई से खास बातचीत
थियेटर प्लस
43 अजय कुमार शर्मा - हबीब तनवीर ने बदला रंगमंच का मुहावरा
इस शहर में सिनेमा हॉल था
46 प्रबोध कुमार गोविल - गुबाली यादें: सिनेमा हॉल जयपुर के!
51 विनोद तिवारी - फिल्म पत्रकारिता -5 ; टुकड़े टुकडे ताजमहल !
पुस्तक प्लस - विनोद नागर की नई किताब
54 विजय कुमार तिवारी - पिछले 50 साल के सिनेमा का आख्यान
58 गीतकार - सेवा सदन प्रसाद
Location Plus
56 Top 5 Film shooting locations in India

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक संजीव श्रीवास्तव द्वारा 37-ए, गली नं, 2, प्रताप नगर, मयूर विहार, फेज-1, दिल्ली-110091 से प्रकाशित।
संपादक - संजीव श्रीवास्तव। चंद्रशेखर प्रिंटर्स, WZ / 439, नारायणा विलेज, नई दिल्ली - 110026 से मुद्रित।

जरूरी सामग्रियों से भरा संग्रहणीय अंक

मासिक पत्रिका 'पिक्चर प्लस' का जून अंक 'सियासत का सिनेमा' और 'सिनेमा की राजनीति' विषय पर केंद्रित है। पहला महत्वपूर्ण लेख जवरीमल्ल पारख का है, 'सांप्रदायिक राजनीति के कुचक्र में हिंदी सिनेमा। पारख बताते हैं कि डेविड वार्क ग्रिफिथ की फिल्म 'बर्थ ऑफ ए नेशन' (1915) भी एक प्रचार फिल्म थी। इस फिल्म में अमेरिकी गृहयुद्ध की कहानी कही गई है। इसमें ग्रिफिथ की सहानुभूति श्वेत समर्थक नस्लवादी समूह 'कुक्लक्स क्लान' के प्रति थी जो मानता था कि अफ्रीकी मूल के लोगों को नियंत्रण में रखना जरूरी है।

वे लेनी रीफेंस्ताल की फिल्म 'ट्राइम्फ ऑफ द विल' के बारे में बताते हैं जिसमें हिटलर को अत्यंत शक्तिशाली शासक बताया गया है। पारख बताते हैं कि मणिरत्नम की फिल्म 'बॉम्बे' (1995) और 'रोजा' (1992) में मुसलमान समुदाय के प्रति पूर्वाग्रह साफ़तौर पर देखा जा सकता है। संजय लीला भंसाली की फिल्म' पद्मावत' सती प्रथा का महिमामंडन करती है।

इस अंक का अन्य मुख्य आकर्षण है-प्रमुख फिल्मी हस्तियों से साक्षात्कार। ये फिल्मी हस्तियां हैं-शमा ज़ैदी, मुजफ्फर अली, यशपाल शर्मा और राजेंद्र गुप्ता। साक्षात्कारकर्ता हैं वरिष्ठ फिल्म पत्रकार दीप भट्ट। सिनेमा का इतिहास का एक महत्वपूर्ण अंग है-सिनेमाघर। उत्तर भारत में खासकर हिंदी पट्टी में हमेशा ही सिनेमाघर दुर्दशा में रहे हैं। 'सिटी ऑफ टॉकीज:मुजफ्फरपुर' में बीरेंन नंदा बंद होते सिनेमाघरों के बारे में बताते हैं। मेरी चिंता यह है कि क्या एक दिन ऐसा आएगा कि सिनेमा तो रहेगा लेकिन सिनेमाघर नहीं रहेंगे। मल्टीप्लेक्स भी आजकल बहुत बुरे दौर से गुजर रहे हैं।

किसी भी फिल्म प्रेमी के लिए 'पिक्चर प्लस' अनिवार्य पत्रिका है। इस अंक में बहुत कुछ पढ़ने को है। शमा ज़ैदी की बातचीत का एक अंश, "एक दिन मैं कैफी आज़मी साहब के साथ बैठी गुफ्तगू कर रही थी तो मैंने उनसे पूछा कि हिंदी पट्टी के सभी लोग तो मुंबई से निराश होकर लौट गए भला आप कैसे रह गए यहां। तो उन्होंने मुझे जवाब दिया कि भारतीय कम्यूनिस्ट पार्टी के महासचिव पीसी जोशी ने कहा कि इप्टा के जरिए ड्रामा करके लोगों तक पहुंचना मुश्किल काम है। फिर इप्टा के पास इतना पैसा भी नहीं है कि वह अपने लोगों का खर्च उठा सके। सिनेमा का मीडियम लोगों से सीधी पहचान भी बनाएगा और आप लोगों की आर्थिक तंगी भी खत्म होगी तो उनकी बात सुनकर हम रुक गए। बाद में जब पीसी जोशी साहब की जगह रणदिवे साहब आ गए तो उनका हिंदुस्तानी सिनेमा के प्रति नजरिया बेहद हिकारत भरा था। वे इसे एक बाजारु और घटिया मीडियम मानते थे। वैसे भी सबसे पहले लखनऊ और बनारस में नाटक करने वाले लोग मुंबई पहुंचे इनमें आगा हश्र कश्मीरी प्रमुख थे।"

सबसे महत्वपूर्ण राजनीतिक फिल्म 1925 में बनी थी- 'बैटलशिप पोटेमकिन'।आज सर्गेई मिखाइलोविच आइसन्स्टाइन को भुलाया जा चुका है। इस बीच इतिहास और भूगोल बदल चुका है। 1926 में ब्रिटिश बोर्ड ऑफ फिल्म सेंसरशिप ने इस फिल्म को प्रतिबंधित कर दिया था क्योंकि ये बोल्शेविक प्रोपेगेंडा फैला रही थी क्योंकि मई 1926 में ही ब्रिटेन में 9 दिन की पूर्ण हड़ताल हुई थी। 1948 में सत्यजित राय ने जब पहली फिल्म सोसाइटी बनाई तब पहली फिल्म 'बैटलशिप पोटेमकिन' ही दिखाई गई थी। अब 2025 में इस फिल्म की शताब्दी मनाने की तैयारी होनी चाहिए।

-मनमोहन चड्ढ़ा, देहरादून

पत्रिका ने 'माधुरी' की याद ताज़ा कर दी

पिक्चर प्लस का मुखपष्ठ देखते ही पहली नज़र में प्यार हो गया। एक अरसे से इतने आकर्षक मुखपृष्ठ की कोई फिल्मी पत्रिका मेरे हाथों में थी। घंटे भर में दोनों अंक पढ़ लिए। पत्रिका की संपूर्ण सामग्री स्तरीय और क्लासिक लगी। फिल्मी होते हुए भी फिल्मों की तड़क-भड़क, चकाचौंध से परे, प्राकृतिक सौंदर्य में सिमटी हुई इस पत्रिका ने निसंदेह 'माधुरी' की याद ताज़ा कर दी।

आदरणीय विनोद तिवारी के दो आलेख देखकर मन प्रसन्न हो गया। यह मेरा सौभाग्य रहा कि उनके संपादकीय काल में मुझे 'माधुरी' में लिखने और मुलाकात का मौका मिला था। प्रख्यात निर्देशक डॉक्टर जब्बार पटेल का इंटरव्यू 'माधुरी' में प्रकाशित हुआ था।

यादवेन्द्र शर्मा चंद्र, डॉ. इन्द्रजीत सिंह और अजय कुमार शर्मा के आलेख बहुत अच्छे लगे। मेरा यह सुझाव है 'पिक्चर प्लस' में केवल एक 'पिक्चर प्रश्न' न पूछकर कम से कम 5 प्रश्न पूछे जाएं और यह सामग्री पूरे एक पृष्ठ पर प्रकाशित की जाए।

-ताराचंद मकसाने, नवी मुंबई।

हमारे लेखक हमारे सलाहकार

मित्रो,

जुलाई का अंक आप सबके हाथों में रखते हुए बहुत भावुक हो रहा हूं। पिछले साल इसी माह पिक्चर प्लस के पुनर्प्रवेशांक की डमी हमने श्रद्धेय शरद दत्त जी के सामने रखी थी। उन्होंने कहा था-तुम्हें डमी बनाकर दिखाने की जरूरत नहीं। तुम्हारी पत्रिका के पुराने अंकों से तुम्हारी अभिरुचि का अंदाजा मुझे पहले से है। अब सीधे अगस्त में पुनर्प्रवेशांक निकालो। मैं एक आर्टिकल दे दूंगा। बाकी चयन सब तुम्हारा होगा। पूरी आजादी के साथ अपना काम शुरू करो। उन्हें पता था कि 'माधुरी' के संपादक अरविंद कुमार जी ने भी पिक्चर प्लस को कैसा प्यार और आशीर्वाद दिया था। वो खुद भी अरविंद जी के मुरीद थे।

वास्तव में शरद दत्त जी की हौसलाअफजाई से ही पिक्चर प्लस का पुनर्प्रवेशांक संभव हो सका था। उन्होंने पुराने अंकों को देखकर कहा था-इसे बंद नहीं करना चाहिए था। हिंदी में फिल्म की कोई अच्छी पत्रिका नहीं है, अब इसे शुरू कराने का मैं प्रण लेता हूं। वाकई उनके प्रण का ही यह प्रताप है कि उनके बाद भी आज इस पत्रिका के पुनर्प्रकाशन का एक साल पूरा हो रहा है। इसकी नींव 2016 में ही पड़ी थी।

मित्रो, आज शरद दत्त जी नहीं हैं, जाहिर है मैं उनकी कमी महसूस करता हूं। लेकिन उनकी कही कुछ बातें याद आती हैं तो बड़ा बल मिलता है। उन्होंने कहा था-कभी किसी से किसी चीज़ की अपेक्षा मत करना। साधनहीन प्रतिभा को लोग यहां गुरुदत्त समझते हैं। 'गुरुदत्त'! मैं ठीक से समझा नहीं। उन्होंने कहा-'प्यासा' देखी है? मैंने कहा-हां। देखो, उसमें कैसा मतलब का समाज दिखाया गया है। बस, अपना काम करते रहो। कोई नोटिस ले या न ले। कोई गंभीरता से विचार करे या न करे। कभी हिम्मत मत हारना। जैसे ही हिम्मत हारोगे, जमाना कुचल देगा। गुरुदत्त ने 'प्यासा' और 'कागज के फूल' में पूरे समाज को जो आईना दिखाया है उसे लोग देखकर शर्मिंदा हो जाएं तो ही यहां बहुत सुधार आ जायेगा। वो कहते थे-तुम्हें बहुत से ऐसे लोग भी मिलेंगे जो खुद को सिनेमा के बड़े शौकीन बताएंगे लेकिन पत्रिका का एक अंक खरीदने से कतराएंगे। ये मेरा बहुत पुराना तजुर्बा है।

वास्तव में शरद जी पत्रिका को लेकर बहुत गंभीर थे। श्रद्धेय प्रहलाद अग्रवाल जी का भी पूरा जोश और समर्थन मिल रहा था। शरद जी ने हमारे एक प्रस्ताव पर मुहर भी लगाई थी-एक ट्रस्ट होगा, यह पत्रिका उस ट्रस्ट की होगी, हर तीन माह पर एक संगोष्ठी करेंगे, सिनेमा की अच्छी पुस्तकों का प्रकाशन करेंगे, लघु फिल्में व डॉक्यूमेंट्री बनाएंगे और फिल्म लेखन के क्षेत्र में अनुसंधान के लिए हर साल एक होनहार प्रतिभाशाली को फेलोशिप भी देंगे, वगैरह। पत्रिका को ट्रस्ट के हवाले करने का विचार मैंने ही रखा था। मैं चाहता था इससे सभी फिल्मप्रेमी, लेखक, शोधकर्ता, फिल्ममेकर, कलाकार आदि अपना-अपना जुड़ाव महसूस करें, उसे मेरी निजी संपत्ति न समझें। आज भी पिक्चर प्लस उन सबके लिए है जो आज की तारीख में एक मुकम्मल फिल्म पत्रिका की जरूरत महसूस करते हैं। शरद जी को दिया मेरा वह प्रस्ताव एक सपना था, क्या वो कभी पूरा हो सकेगा?

शरद दत्त जी ने प्रोत्साहित किया था और प्रधान संपादक के तौर पर अपना नाम छापने की अनुमति दी धी, यह हमारे लिए गौरव की बात थी। आज बहुत से लोग यह मानते हैं पत्रिका के संपादकीय बोर्ड में किसी बड़े शख्स का नाम नहीं है। यह मैं भी महसूस करता हूं लेकिन कई व्यावहारिक बातें सोचकर रुक जाता हूं, जिस पर चर्चा फिर कभी होगी। हां, इतना जरूर कहना चाहता हूं कि हमारे सभी वरिष्ठ लेखक मेरे सलाहकार हैं और मेरे पाठक मेरे संरक्षक हैं। उन सबसे केवल इतनी भर दरख्वास्त है कि यह पत्रिका देखते, पढ़ते रहें, गलतियां, कमियां बताते रहें, सशुल्क घर पर मंगवाएं अन्यथा ऑनलाइन पढ़ें और समयानुसार यथोचित लेखन का सहयोग देते रहें। मेरा दावा है इतने भर से माहौल बदल जाएगा।

यह अंक सिनेमा में बरसात के बहाने पर्यावरण व जलवायु परिवर्तन पर फोकस किया गया है। अंक कैसा लगा, कृपया जरूर बताइगा। हम जुटते हैं अगले अंक की तैयारी में। सादर।

आपका संपादक

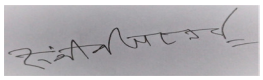

संजीव श्रीवास्तव